संस्कृत संस्कृति संस्कार

■ वर्ष 1 ■ अंक 01 ■ सितम्बर 2025

धरोहर संरक्षण सेवा संगठन
(धर्मो रक्षति रक्षितः)

धरोहर

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹25/-

शिक्षित बालिका - सुदृढ़ भारत !

वाराणसी परिक्षेत्र में बालिका महिला शिक्षा क्षेत्र में वर्ष 1957 अर्थात पिछले 68 वर्षों से अनवरत सेवारत

पं. जयनारायण दूबे
एडवोकेट (संस्थापक)

पं. जय नारायण दूबे, एडवोकेट

संस्थापक

सुधाकर सुधाकर महिला शिक्षण संस्थान समूह

श्रीमती शान्ति दूबे
संस्थापिका (पूर्व प्रधानाचार्य)

समूह द्वारा संचालित संस्थायें

- **सुधाकर महिला पोस्ट ग्रेजुएट कालेज :** कला संकाय - बी.ए., एम.ए.- हिन्दी एवं समाजशास्त्र, शिक्षा संकाय- बी.एड., विज्ञान संकाय, बी.एस.सी. (बी.जेड. - सी. एवं पी.एम.सी.), वाणिज्य संकाय - बी.काम. (समस्त ग्रुप)
- **सुधाकर महिला विधि महाविद्यालय :** विधि संकाय - एल.एल.बी., तीन वर्षीय
- **सुधाकर महिला इण्टरमीडिएट कालेज :** कला, विज्ञान वर्ग (कम्प्यूटर) एवं वाणिज्य वर्ग
- **सुधाकर संस्कृत स्नातकोत्तर महाविद्यालय :** शास्त्री एवं आचार्य - साहित्य एवं पुराणेतिहास
- **सुधाकर संस्कृत माध्यमिक विद्यालय**

सुधाकर महिला शिक्षण संस्थान समूह वाराणसी

डॉ. मधुनारायण दूबे

खजुरी, पाण्डेयपुर, वाराणसी, मो. 9452766111

Chetmani

Adding Colors to Tradition !

एक अद्भुत ज्वेलरी शो जो संस्कृति, कला और सुंदरता एक ही मंच पर संजोएगा।
शादी–शगुन, श्रृंगार और त्योहारों के लिए सबसे अनोखे व अनुपम कलेक्शन्स ।

Chetmani Gems & Jewels Pvt.Ltd.

LAHURABIR | RATHYATRA | RAVINDRAPURI

Contact : +91 91707 06777

धरोहर

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

■ वर्ष 1 ■ अंक 01 ■ सितम्बर 2025

प्रधान सम्पादक
श्री कृष्णा नन्द पाण्डेय

सम्पादक
श्री गौरव मिश्र

सह-सम्पादक
श्री गोविन्द तिवारी
श्री राजीव पाण्डेय

समाचार संकलन
श्री गौरीश सिंह
श्री अजय चौबे

साज-सज्जा
श्री केशव मण्डल
श्री शुभम पाण्डेय
श्री मुकेश कुमार

विधिक सलाहकार
श्री रामानन्द पाण्डेय
श्री अमन त्रिपाठी

विज्ञापन प्रबंधक
श्री आनन्द मिश्र 'बब्बू'
श्री प्रतीक गुप्ता

प्रकाशक
शिखर प्रिण्टर्स

प्रबंधक
डॉ. पीयूष मिश्र

प्रमुख सहयोगी
श्री अशोक पाण्डेय 'पप्पू'
श्री राकेश त्रिपाठी
श्री चंद्रदेव पटेल
श्री उपेन्द्र सिंह
श्री रमाकान्त पाण्डेय

संरक्षक
श्री जगजीतन पाण्डेय
(महामंत्री- धर्मसंघ शिक्षा मण्डल)
श्री शम्भू सिंह
(निदेशक- राज वी.एफ.एक्स.), मुम्बई
डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय
(सुधाकर महिला महाविद्यालय)

विषय सूची — पृष्ठ सं0

1. काशी के पौराणिक मंदिर में पढ़ी जाती है नमाज़, बन्द हो...! - 3
2. 'सनातन का शूद्र' व 'संविधान का दलित' - 5
3. कृष्ण सुदामा शिक्षा अभियान - 7
4. 'डायरेक्ट एक्शन डे' हत्यारे सुहरावर्दी के साथ गांधी का प्रवास - 9
5. सनातन संस्कृति में सोलह संस्कार - 11
6. हमारी संस्कृति हमारी धरोहर - 13
7. सनातन के 18 पुराण - 15
8. स्वदेशी के प्रहार से खत्म होगा टैरिफ का आतंकवाद - 17
9. संगठन की शक्ति - 19
10. समाचार-पत्र दर्शन - 20

-: सम्पर्क सूत्र :-
मो. : +91-9839404041, +91-7007896812
ई-मेल : dharoharsanrakshan@gmail.com
केन्द्रीय कार्यालय : ऐढ़े, लमही, वाराणसी-221007 (उ0प्र0)

सहयोग के लिए स्कैन करें।

संपादकीय

कृष्णा नन्द पाण्डेय
प्रमुख संयोजक
धरोहर संरक्षण सेवा संगठन

सनातन धर्म केवल आचरण का बाहरी नियम नहीं, यह आत्मा की आंतरिक पुकार है। जब हम सनातन धर्म का पालन करते हैं तो वास्तव में हम स्वयं को सुरक्षित रखते हैं, क्योंकि सनातन धर्म हमें हमारे सत्य स्वरूप से जोड़ता है। सनातन धर्म का वास्तविक अर्थ है सत्य का आचरण, करुणा का संचार, और आत्मा के शाश्वत प्रकाश में जीवन यापन करना। जहाँ सनातन धर्म है, वहाँ भय नहीं; जहाँ सनातन धर्म है, वहाँ सत्य स्वरूप संप्रभुता है। सनातन धर्म से जुड़ो, सनातन धर्म में स्थित हो जाओ यही अमरत्व का मार्ग है। सनातन धर्म वेदों में निहित है ।वेद ही भगवान है, वेद ही विज्ञान है। हमारे वेदों में विज्ञान, गणित, भौतिक, रसायन, भूगोल , जीवन से जुड़े वो मंत्र हैं, जो हमें परम वैभव प्राप्त करने में सहयोगी होते है, दुनिया में कोई अन्य धर्म शास्त्र नहीं है जहाँ ये बाते लिखी गई हो। कोई भी धर्म इतना विराट नही है, हम कह सकते है कि **"सत्य ही सनातन है, और सनातन ही मानवता है"** पूरी दुनिया के सार्वभौमिक उत्थान का दर्शन केवल सनातन धर्म में है, विडंबना यह है कि हम आज सनातन दर्शन से बहुत दूर हो चुके हैं, आज हमारी शिक्षा में हमारी संस्कृति का एक शब्द हमारे पाठ्यक्रम में न होना यह भारत के लिए बहुत बड़ा दुर्भाग्य का विषय है, प्राचीन भारत के पाठशालाओ में जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता था, उसका वर्गीकरण दो भागों में होता था पहला शस्त्र और दूसरा शास्त्र हुआ करता था, आज हम इससे बहुत दूर हो गए हैं, एक बात कल भी प्रासंगिक था और आज भी प्रासंगिक हैं, **"बिना शस्त्र के शास्त्र का अनुसंधान असंभव है "** इस बात की पुष्टि भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिन्दूर' से कर दिया। भारतीय सेना के पास आज आधुनिक तकनीक के स्वदेशी शक्तिशाली ब्रह्मोस, लड़ाकू विमान, ड्रोन, आकाश तीर जैसे- शस्त्र होने के कारण, दुश्मन द्वारा भारत में जन-धन की हानि पहुचाने की पूरी कोशिश विफल हो गई । एक ओर जहाँ दुश्मन देश व उनके सहयोगी देश अपने अपने नुकसान का आंकलन कर रहे हैं, वही भारतीय शस्त्रों की अन्य देशो में बढ़ती मांग को देखते हुए, टैरिफ की धमकिया भी मिल रही है, हमे भी इसका जबाब देना होगा। **"स्वदेशी के प्रहार से खत्म होगा, टैरिफ का आतंकवाद"** **आज भारत का स्वदेशी शस्त्र पूरी दुनिया को भारत की ओर आकर्षित होने के लिए प्रेरित कर रहा है, जिस दिन शस्त्र के साथ शास्त्र जुड़ जाएगा, भारत पूरी दुनिया का पथ प्रदर्शक होगा ।**

।। जय सिया राम।।

काशी के पौराणिक मंदिर में पढ़ी जाती है नमाज़, बन्द हो ...!

॥ श्री कृत्तिवासेश्वराय नमः ॥

भारत में मुगलों द्वारा हमारे आत्मगौरव, धरोहर, मंदिर एवं परम्पराओं को कलंकित करने का कुकृत्य किया गया। हर सनातनी का परम कर्तव्य है कि उस आत्मगौरव, धरोहर, मंदिर और परम्परा को पुनः स्थापित करने के लिए यदि अपने सर्वस्व को न्योछावर करने की आवश्यकता पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए।

हमारे मंदिर, परम्परा, आत्मगौरव और धरोहर दृष्टिगत रूप से ही नहीं, अपितु सनातन धर्म की मूल आत्मा हैं। इनके बिना सनातन की परिकल्पना नहीं की जा सकती। मुगलों ने हमारे धर्म को समाप्त करने के लिए इन्हीं मूल बिन्दुओं पर आक्रमण किया। उनके द्वारा हमारे पौराणिक स्थलों पर कुकृत्य कर हमारे आत्मगौरव को कलंकित किया गया। मंदिरों और पौराणिक स्थलों, धरोहरों को तोड़ा गया।

आज हम आपको परिचित करा रहे हैं काशी के पौराणिक, सबसे धनाढ्य, दक्षिण भारतीयों की विशेष आस्था के केन्द्र कृत्तिवासेश्वर महादेव जी से। **इस मंदिर में आज भी नमाज़ पढ़ी जाती है। क्या मंदिर में नमाज़ पढ़ना, सड़क पर, रेलवे लाइन व स्टेशन पर मज़ार बनाना ही गंगा-जमुनी तहज़ीब है?**

सुप्रसिद्ध कृत्तिवासेश्वर मंदिर का अतिप्राचीन मंदिर स्थल वृद्धकाल के दक्षिण और कालभैरव के उत्तर कुछ पूर्व की ओर झुकते हुए गली के दाहिनी ओर हंसतीर्थ (हरतीरथ) मुहल्ले में स्थित है। (वर्तमान में भवन सं0 के. 46/38 हरतीरथ, वाराणसी) इस पुराने और अत्यन्त महत्वपूर्ण मंदिर की महिमा इसी से स्पष्ट है कि कई बार मंदिर तोड़े जाने पर भी सत्रहवीं शताब्दी तक बना रहा। यह मंदिर सुन्दर वैभवशाली तथा भक्तों की आस्था का महत्वपूर्ण केन्द्र था। इसी कारण सन 1659 ईसवी में औरंगजेब ने उसको तोड़कर आलमगीरी (औरंगजेब के दूसरे नाम पर पड़ा) मस्जिद नाम दिया। औरंगजेब ने उस समय के लोक आस्था के लिए प्रख्यात, वैभवशाली महत्वपूर्ण और सुन्दर तीन मंदिरों को तुड़वाया उसमें से कृत्तिवासेश्वर प्रमुख है। बाकी दो मंदिर, विश्वेश्वर (काशी विश्वनाथ) तथा बिन्दुमाधव थे। काशी के प्रधान शिवलिंगों में कृत्तिवासेश्वर का ऊँचा स्थान है। वाराणसी के 42 प्रमुख शिवलिंगों में कृत्तिवासेश्वर प्रमुख शिवलिंग माना जाता है। फाल्गुन की शिवरात्रि के दिन इस लिंग के दर्शन, पूजन का विशेष महत्व है। इसीलिए शिवरात्रि के दिन इस लिंग की पूजा के लिए भारी भीड़ होती है। मंदिर के पूर्व में संलग्न हंसतीर्थ था जो अब भी हरतीरथ पोखरे के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर के माहात्म्य का इसी बात से अनुमान हो सकता है कि आज भी महाशिवरात्रि के दिन सहस्त्रों स्त्री पुरुष कृत्तिवासेश्वर शिवलिंग के दर्शन, पूजन, कीर्तन, अभिषेक आदि के लिए आते हैं और निहाल हो जाते हैं। **दुर्भाग्य इस बात का है कि शिव जी का पौराणिक मंदिर होने के बाद भी सनातनी साल में केवल एक दिन महाशिवरात्री पर सामूहिक रूप से इस मंदिर में दर्शन कर पाते हैं। शेष वर्ष पर्यंत इस पौराणिक मंदिर में नमाज पढ़ी जाती है।**

कृत्तिवासेश्वर शिवलिंग माहात्म्य (कथा)

शिवपुराण (काशीखण्ड - 65 वां अध्याय) महिषासुर के पुत्र गजासुर ने ब्रह्माजी से वरदान प्राप्त करके पृथ्वी को जीत लिया परन्तु जब काशी में आकर उसने उपद्रव शुरू किया तो शिवजी ने गजासुर के सिर को त्रिशूल से भेद दिया उस समय वह पवित्र होकर शिवजी से विनय करने लगा। शिव ने गजासुर को वरदान दिया कि तेरा यह सिर हमारा लिंग होकर कृत्तिवासेश्वर के नाम से विख्यात होगा इसके दर्शन से ही मोक्ष की प्राप्ति होगी। यह कहकर शिवजी ने गजासुर को परमगति दी।

कृत्तिवासेश्वरस्यार्चनम्

हेमाद्रि तीर्थखण्डे लै-फाल्गुनस्य चतुर्दश्यां कृष्णा पक्षे समाहिताः।
कृत्तिवासेश्वरं लिंङ्गमर्चयन्ति शिवं शुभे। ते यानि परमं स्थानं सदाशिवमनामयम् ।।

हेमाद्रि के तीर्थखण्ड में लिंग पुराण का मत है कि फाल्गुन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को सावधानी से कृत्तिवासेश्वर लिंग में शिव की अर्चना करते हैं। हे शुभे, वे लोग सदा आनन्दित और रोग रहित हो उत्तम स्थान को जाते हैं।

(निर्णय सिन्धु, पृ0 469)

02-01-2025, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

काशी खण्डोक्त कृतिवाशेश्वर महादेव मन्दिर मे हनुमान चालीसा पाठ करने से प्रसासन ने रोका,पढ़ी जाती है, नमाज – कृष्णा नन्द पाण्डेय

वाराणसी: “धरोहर संरक्षण सेवा संगठन “ एवम् व्यापार मण्डल अध्यक्ष प्रतीक गुप्ता व मार्कण्डेय तिवारी के नेतृत्व पौराणिक काशी खण्ड मे उल्लेखित

साथ ही मंदिर में स्थित कृतिवाशेश्वर महादेव के परिसर को विखंडित करके सनातनी भक्तों द्वारा पूजित शिवलिंग को ... दिया गया है जिस कारण

श्री कृत्तिवासेश्वर दर्शन फल

श्री कृत्तिवासेश्वर काशीवास को सुफल करने वाले तथा दर्शन मात्र से मुक्ति देने वाले है। **- ब्रह्मवैवर्त पुराण**

श्री कृत्तिवासेश्वर को प्रणाम करनेवाले रूद्रशरीर में प्रवेश करके पुनर्जन्म बन्धन से छुटकारा पा जाते हैं और इसी शरीर में उनको मुक्ति मिलती है। **- लिंग पुराण**

यदि शाश्वत अमरत्व तथा तारक ब्रह्म की अभिलाषा हो तो कृत्तिवासेश्वर का बारम्बार दर्शन पूजन करता रहे प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी को दर्शनपूजन का विशेष वर्णन है। **- लिंग पुराण**

हजारों जन्म जन्मान्तर में अन्यत्र मोक्ष मिले या न मिले किन्तु कृत्तिवासेश्वर की कृपा से एक ही जन्म में निश्चय मिलता है। **- (कू.पु. 32/22.)**

- सात करोड़ महारूद्र मंत्र के जपने से जो फल मिलता है काशी में केवल कृत्तिवासेश्वर का पूजन करने से वही फल प्राप्त होता है।
- माघवदी चतुर्दशी को उपवास और रात्रि जागरण करके कृत्तिवासेश्वर की पूजा करने से परम गति प्राप्त होती है।
- जो चैत्र पूर्णिमा को कृत्तिवासेश्वर का धूमधाम से उत्सव करता है यह गर्भ में कभी नहीं होता अर्थात् जन्ममरण के बंधन से मुक्त हो जाता है।
- कृत्तिवासेश्वर के समीप तपस्या, जपदान, होम तर्पण और देवता पूजन आदि जो कुछ भी किया जावे वो सब अनन्त हो जाता है।

प्रतीक गुप्ता
राष्ट्रीय सह संयोजक,
धरोहर संरक्षण सेवा संगठन
अध्यक्ष,
विशेश्वरगंज भैरवनाथ व्यापार मंडल

इतने पौणारिक प्रमाण के बाद भी कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका कब जागेगी। कृत्तिवासेश्वर महादेव जी के भक्तों को न्याय कब मिलेगा। यह प्रमाण तब के है जब इस्लाम का जन्म भी नही हुआ था। **जागो महोदव जी के भक्तों, संगठित आवाज उठाने की आवश्यकता है। क्योकि शक्ति के अभाव में न्याय मर जाता है, स्मरण रहें.... संगठन में ही शक्ति है।**

मंदिर का मूल स्वरूप वापस आने तक संघर्ष जारी रहेगा।

'सनातन का शूद्र' व 'संविधान का दलित'

प्राचीन भारत में शूद्र सनातन वर्ण व्यवस्था का सबसे प्रमुख स्तम्भ माना जाता था। हर वर्ण में जातियाँ हुआ करती थी, हर जाति का अपना कार्य हुआ करता था । कोई किसी के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करता था। आज शूद्र का नाम आते ही भारत की एक ही चमार जाति समझती है कि उसकी ही जाति शूद्र है जब कि ऐसा नहीं है। शूद्र वर्ण में कई जातियाँ आती हैं, सेवा वर्ग का कार्य पूरी तरह से शूद्र की जिम्मेदारी हुआ करता था ।

सेवा का अर्थ लोग एक वर्ण के लोगों के व्यक्तिगत सेवा से जोड़ दिये, जो गलत है। आज की भाषा में कहे तो पूरा Service Sector शूद्र के हाथ में था। कौशल कार्य (Skilled Work), कल-कारखाने, फैक्ट्रीयाँ सब शूद्र के ही पास था। नाऊ, धोबी, लोहार, कुम्हार, चमार, माली, ढरकार, नोनिया, कहार, बिन्द, मल्लाह, मुसहर, डोम व कुछ अन्य जाति या जो आज की भाषा में निर्माण (Manufacturing) व संचालन का कार्य शूद्र ही करता था। यहाँ तक कि हमारे वेदों की रचना शूद्र के द्वारा ही हुआ है - महर्षि वेद व्यास शूद्र वर्ण से थे, सनातन में कभी न तो भेदभाव था न ही छुआ-छूत था, न ही किसी के प्रति किसी से दुर्भाव था ।

वर्ण व्यवस्था- जिस कार्य का वरण जो व्यक्ति कर लेता था वो उस वर्ण का हो जाता था। महर्षि वेद व्यास से लेकर संत रविदास तक हजारों संत ऐसे हुए जो शूद्र वर्ण में पैदा हुए फिर भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए, आज भी ये संत सभी सनातनियों के लिए पूज्य हैं। पहले मुगलों ने फिर अंग्रेजों ने सनातन धर्म के लोगो को भ्रमित करने का काम किया । सनातनियों को उनके कार्य को छोटा बताकर भ्रमित किया व भेदभाव पैदा किया। हम अपना कार्य छोड़ कर आपस में लड़ने लगे, मुगलों ने हमारे ही कार्य पर आधिपत्य जमा लिया। भारत का चमार चमड़े का कार्य नहीं छोड़ा होता तो बाटा, लिबर्टी, पुमा, एक्सन, मोची व तमाम ब्राण्डेड कम्पनियों का मालिक भारत का चमार होता ।चमड़े से सम्बंधित, प्लास्टिक से सम्बन्धित जितने भी कार्य हो रहे हैं, जितनी भी इस कार्य से संबंधित फैक्ट्रीयाँ हैं, इनका मालिक भारत का चमार होता, भारत का चमार कितना मजबूत होता आप कल्पना कर लिजिए। शूद्र वर्ण में अन्य जातियाँ भी अपना कार्य छोड़ कर आज परेशान हैं, आज मैट्रो सिटी में एक भी सनातनी लोहार प्लम्बर नहीं रह गये है। यही हाल हर कार्य में आप को मिलेगा- बढ़ई, लोहार, नाई, धोबी, मुसहर, चमार, कुम्हार, शूद्र वर्ण की हर जाति अपना कार्य छोड़ कर सरकारी नौकरी का रोना रो रहे हैं। दिन- प्रतिदिन इनकी स्थिति बिगड़ती जा रही है। हम सोच ही नहीं पा रहे है कि **कर्म छोटा नहीं होता, करने का तरीका छोटा-बड़ा हो सकता है। हम अपने काम को छोड़ करके दरिद्र हो गये, केवल सरकारी नौकरी से सबका कल्याण नहीं हो पायेगा।** हमारे साथ आजीविका जेहाद हुआ, हम अपने कार्य को छोटा समझकर छोड़ते गये, विधर्मी हमारे आजीविका के संसाधनो पर कब्जा करते गये। इस विषय पर चिन्तन करने की आवश्यकता है।

दुनिया का कोई भी संविधान अपने एक-एक नागरिक को रोजगार नहीं दे सकता, सनातन का संविधान अपने एक-एक व्यक्ति को रोजगार देने की गांरटी देता हैं। जो आज है उसको भी जो हजारो साल बाद भी आएगा उसको भी !

सनातन की 'जाति व्यवस्था' ही भारत की 'अर्थ व्यवस्था' थी

तुलना

सनातन का शूद्र

1- स्किल्ड वर्क, सर्विस सेक्टर, कल-कारखाने, फैक्ट्रीयाँ सब सनातन के संविधान में शूद्र के पास था।
2- अपने जाति के व्यवसाय के साथ खेती हर वर्ण के लोग करते थे, हर जाति में तीन-चार रोजगार थे।
3- नर्सिंग (प्रसव) का कार्य अधिकतर (90%) चमार परिवार की महिलाएँ करती थी।
4- सनातन के शूद्र में नाऊ, धोबी, लोहार, मल्लाह, कोहार, ढरकार, नोनिया, धुनिया, जुलाहा, मुसहर, सोनार, डोम, ठठेरा व कुछ अन्य जातियाँ थी, जिनका अपना अलग व्यवसाय था।
5- सनातन धर्म में अनेक संत जो शूद्र वर्ण में पैदा हुए फिर भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त किए।
6- फिजियोथिरेपी का कार्य नाई से अच्छा कोई नहीं कर सकता, इसके अलावा इनका पारम्परिक कार्य इनके पास था।
7- सारथी (ड्राइवर) का कार्य भारत का कहार, मुसहर करता था।

संविधान का दलित

1- आरक्षण के नाम पर छला गया, आजादी का 8वाँ दशक पूरा होने जा रहा है, जो जहाँ था वही है आज उनका व्यवसाय उनके पास नहीं रहा, दलितों के व्यवसाय पर विधर्मियों का कब्जा हो गया।
2- आजादी के अस्सी वर्ष बाद भी संविधान का दलित बेरोजगार है। सरकारी नौकरी के आरक्षण के अलावा संविधान में दलितों के लिए कोई व्यवस्था नहीं है।
3- सरकारी व प्राइवेट अस्पतालों मे केवल 40% नर्सिंग का कार्य चमार परिवार की माताओं, बहनों के लिए रिजर्व कर दिया जाना चाहिए। क्योंकि नर्सिंग उनके DNA में है, यह कार्य उनसे अच्छा कोई नहीं कर पायेगा।
4- सनातन के शूद्र को ही नाम दिया गया 'संविधान का दलित' आज दलितों के पास उनका व्यवसाय नहीं रह गया, उनके व्यवसाय पर विधर्मियों का कब्जा हो गया।
5- संविधान का दलित S.C. का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के बाद कभी ब्राह्मणत्व को प्राप्त नहीं कर सकता।
6- संविधान में नाई के पारम्परिक कार्य के लिए कोई जगह नहीं है, 40%, इनके परम्परागत कार्य में आरक्षण होना चाहिए, आज का फिजियोथेरेपी नाई जाति का परम्परागत कार्य है।
7- संविधान में 40%, सारथी (Driver) का कार्य कहार, मुसहर के लिए आरक्षित होना चाहिए।

संविधान के दलित को अपने उत्थान के लिए सनातन का शूद्र बनना होगा, अपने जातिगत व्यवसाय को अपनाना होगा, जिससे हर हाथ को काम मिलेगा, जब हर हाथ को काम मिलेगा, तभी आपके समाज का व स्वयं आपका उत्थान होगा।

जो दलित I.A.S. , P.C.S., Doctor, Engineer बनने की योग्यता रखते हैं- उनका स्वागत हो, पर जो लोग सरकारी, गैर- सरकारी नौकरियाँ नही प्राप्त कर पा रहे हैं, वो अपने जातिगत व्यवसाय पर ध्यान दें। आपका व्यवसाय आपको फैक्ट्रीयों, कल- कारखानों का मालिक बनने के लिए आमन्त्रित कर रहे हैं। आप सरकारी नौकरी के लिए संविधान का दलित व व्यवसाय के लिए सनातन का शूद्र बन जाइए।

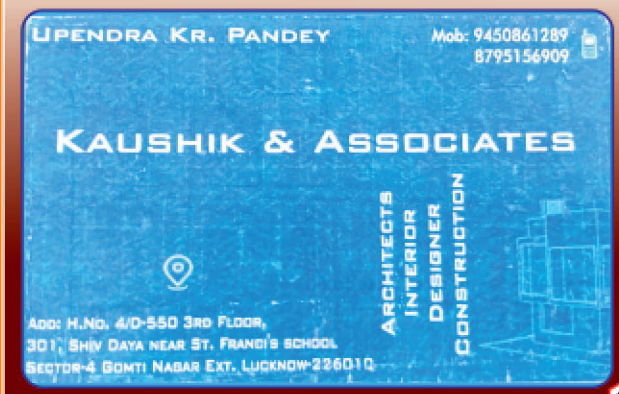

कृष्ण सुदामा शिक्षा अभियान

आंदोलन

एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम

भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और प्राचीन संस्कृति वाले देश में आज शिक्षा एक व्यापार बन चुकी है। शिक्षा का उद्देश्य जहाँ समाज को सुसंस्कृत, समभावी और आत्मनिर्भर बनाना था, वहीं आज यह असमानता, आर्थिक बोझ और सामाजिक विभाजन का कारण बन गई है। यही समय है जब हमें एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम' जैसी क्रांतिकारी पहल की आवश्यकता है।

1. शिक्षा में असमानताः

आज हमारे देश में एक ही कक्षा के विद्यार्थी अलग-अलग बोर्ड, अलग-अलग पाठ्यक्रम, और अलग-अलग फीस ढांचे में पढ़ रहे हैं। आज श्रीकृष्ण और सुदामा एक ही विद्यालय में नहीं रह गए। एक समृद्ध परिवार का बच्चा आईसीएसई/सीबीएसई बोर्ड के अंतरराष्ट्रीय स्कूल में पढ़ रहा है और एक सामान्य आय वाला बच्चा सरकारी या क्षेत्रीय बोर्ड में। इससे सामाजिक समरसता का विघटन हो रहा है।

2. पारिवारिक तनाव और विघटनः

जब एक ही परिवार में दो भाइ्यों के बच्चों को अलग-अलग स्कूलों में पढ़ाने की मजबूरी होती है, तो पारिवारिक मनभेद उत्पन्न होते हैं। आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति बेहतर शिक्षा में निवेश करता है, वहीं कमजोर भाई पीछे छूट जाता है। इससे रिश्तों में खटास आती है पारिवारिक तनाव और विघटन का महंगी शिक्षा ही प्रमुख कारण है ।

3. जनसंख्या असंतुलन और सनातन संस्कृति पर प्रभावः

आज सनातन समाज का युवा जब परिवार बढ़ाने की सोचता है, तो शिक्षा का खर्च उसे पीछे खींचता है। अधिकांश युवा एक या अधिकतम दो बच्चों की योजना बनाते हैं – जिसका प्रमुख कारण महंगी शिक्षा है । यह एक गंभीर सामाजिक और सांस्कृतिक संकट का संकेत है। शिक्षा को बोझ बनने से रोकना अब अनिवार्य है।

4. पलायन और निजी स्कूलों की मनमानीः

महंगे निजी विद्यालयों की फीस, दाखिला प्रक्रिया और अलग-अलग बोर्डों की प्रतिस्पर्धा ने गाँव-गाँव से प्रतिभाओं को पलायन के लिए मजबूर कर दिया है। वहीं सरकारी विद्यालयों को नजरअंदाज कर बंद किया जा रहा है, जिससे शिक्षा का विकेंद्रीकरण और गुणवत्ता दोनों प्रभावित हो रहे हैं।

जिलाधिकारी वाराणसी को महंगी शिक्षा के विरूद्ध प्रधानमंत्री जी को संबोधित ज्ञापन दिया गया।

कृष्ण सुदामा शिक्षा अभियान

आंदोलन

एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम

5. समाधानः

'एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम' इस विकराल स्थिति का समाधान एक सरल, परंतु दूरदर्शी नीति में छुपा है।

6. एक ही बोर्डः

जिससे शिक्षा की गुणवत्ता, मूल्यांकन और प्रमाण पत्र सबके लिए समान हों।

- **एक ही पाठ्यक्रमः** ताकि सभी छात्रों को समान ज्ञान और मूल्य प्राप्त हो।
- **एक जैसी फीसः** जिससे आर्थिक स्थिति से परे हर बच्चा समान शिक्षा प्राप्त कर सके।

7. संस्कृति-समर्थ शिक्षाः

भारतीय संस्कृति, भाषा, और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा से समाज फिर से आत्मनिर्भर और समरस बन सकेगा।

8. सरकारी विद्यालयों को पुनर्जीवित करने का अवसरः

यदि कक्षा 12वीं तक सरकारी और निजी विद्यालयों में समान पाठ्यक्रम और समान फीस होगी, तो माता-पिता सरकारी विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित होंगे। इससे शिक्षा का निजीकरण रुकेगा, सरकारी संसाधनों का सदुपयोग होगा, और समाज में शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पुनः स्थापित होगा। **'एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम'** केवल एक नारा नहीं, बल्कि यह शैक्षणिक समानता, सामाजिक समरसता, और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव है। भारत को यदि सशक्त बनाना है, तो शिक्षा को व्यापार नहीं, बल्कि सेवा और समानता का माध्यम बनाना होगा।

उप जिलाधिकारी पिण्डरा, वाराणसी को महंगी शिक्षा के विरूद्ध प्रधानमंत्री जी को संबोधित ज्ञापन देते हुए ।

केसरिया भारत के द्वारा चलाया जा रहा यह अभियान केवल एक आंदोलन नहीं, अपितु भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव है, आपकी सहभागिता से आंदोलन को बल मिलेगा।

‘डायरेक्ट एक्शन डे’

हत्यारे सुहरावर्दी के साथ गांधी का प्रवास

बहुत कम सनातनी **'Direct Action Day'** के बारे में जानते है। कोलकाता में 1946 में 33% अल्पसंख्यक मुसलमानों ने कोलकाता को साक्षात श्मशान में परिवर्तित कर दिया था। यह कार्य मुस्लिम लीग द्वारा किया गया था। सुहरावर्दी के नाम से एक कट्टर मुसलमान अविभाजित भारत का आखिरी मुख्यमंत्री था। यह खूनी खेल सुहरावर्दी ने जिन्ना के साथ मिलकर सत्ता हथियाने के लिए किया था। खेद है आज कोलकाता में एक प्रमुख सड़क का नाम इसी सुहरावर्दी के नाम से जानी जाती है।

हमारे देश के पाठ्यक्रम में ऐसा खूनी इतिहास कभी नहीं पढाया जाता।

16 अगस्त 1946 का दिन कलकत्ता में हजारों हिंदुओं के खून से सना हुआ दिन है। हुसैन सुहरावर्दी ने सारी पुलिस को 3 दिन की सामूहिक छुट्टी दे दी थी। डायरेक्ट एक्शन डे 16 अगस्त 1946 के दिन मोहम्मद अली जिन्ना की घोषणा का परिणाम था। जिन्ना ने कोलकाता को इसलिए चुना क्योंकि बंगाल में मुस्लिम लीग की सरकार थी और हुसैन सुहरावर्दी बंगाल का मुख्यमंत्री था। आक्रमण इतने भीषण थे कि अनुमान के अनुसार पहले ही दिन चार हज़ार से अधिक लोग मारे गए। जिन्ना, सुहरावर्दी और शेख मुजीबुर्रहमान ने मुस्लिम लीग की ओर से बंगाल के मुसलमानों का नेतृत्व किया। यह जिन्ना के आह्वान का ही परिणाम था कि कोलकाता के साथ-साथ नोआखाली और बिहार में भी भीषण दंगे हुए। इनका असर यह रहा कि काँग्रेस पार्टी ने जिन्ना की अलग देश की माँग को स्वीकार कर लिया।

गोपाल पाठा
हिंदुओं के नायक

जब सुनियोजित तरीके से सुहरावर्दी और बंगाल पुलिस की मिलीभगत से लीग के गुंडों ने सड़कों पर हिंदुओं का कत्लेआम मचाया था, उसके बाद गुस्से की आग पूरे बंगाल में फैल गई थी। 16 अगस्त से शुरू हुए दंगे के बाद 17 की शाम से हिंदुओं ने गोपाल पाठा के नेतृत्व में पलटवार करना शुरू कर दिया, हिंदुओं के पलटवार शुरू होते ही दुरात्मा गांधी कोलकाता पहुंच गए।

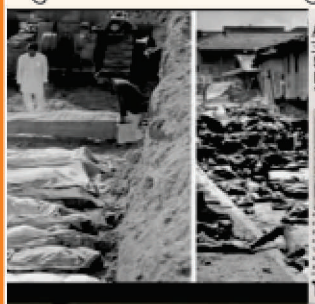

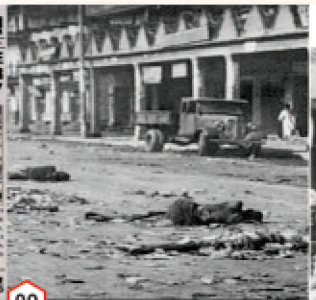

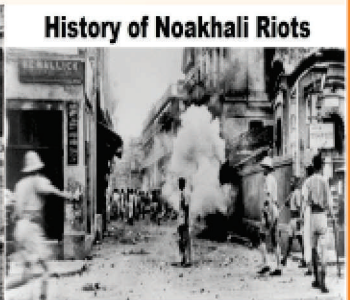

सबसे भयानक कत्लेआम नोआखाली में हुआ था... यहां का दिआरा शरीफ, हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए धार्मिक जगह था... पर यहां के खादिम गुलाम सरवर ने हिन्दुओं के खिलाफ तकरीरें करनी शुरू कर दी थीं। तकरीरें चलती रहीं, दंगे होते रहे... सैकड़ों लोगों को मार दिया गया। हजारों औरतों का बलात्कार हुआ, हजारों का जबरन धर्म बदलवा दिया गया। नोआखाली के दंगे ने हिंसा का एक अलग रूप दिखाया।

गांधी दंगों के दौरान नोआखाली गए, उस इलाके में गए जहां पर मुसलमान ज्यादा मरे थे। वहां उन्होंने सुहरावर्दी से जिद की कि मेरे साथ एक ही घर में रुको, दोनों हैदरी हाउस में रुके, इस बात से जनता में बहुत आक्रोश था। फिर दोनों बाहर निकले, एक अधनंगा और दूसरा सूट-बूट में। एक तथाकथित अहिंसा का प्रेमी और दूसरा हजारों के कत्ल का इल्जाम लिए हुए। जनता ने गांधी को घेर लिया और उनसे कड़क सवाल पूछे, मगर मौन व्रत का भावनात्मक कार्ड खेलकर गांधी ने नोआखाली में हो रहे हिंदू पलटवार को रुकवा दिया। अब इतिहास अपनी जगह है और तमाम दास्तानें अपनी जगह...मगर ये सवाल इतिहास की गठरी से अक्सर निकलता रहता है कि **'डायरेक्ट एक्शन डे'** के कर्ता-धर्ता सुहरावर्दी के साथ गांधी एक ही घर में क्यों रुके थे?
पर अब बहुत से राष्ट्रवादी इस सत्य से अवगत हो चुके हैं।

चंद्रदेव पटेल
राष्ट्रीय सचिव,
धरोहर संरक्षण सेवा संगठन

आज की भ्रमित नौजवान पीढ़ी जिसे अपने इतिहास का 'इ' नहीं पता ...

दोष आज की पीढ़ी का नही है इतिहास लिखने वालो का हैं। सरकार जैसी होती है, इतिहास वैसा ही होता है। अंग्रेजो की सरफरस्त सरकार भारत में चलती थी । प्रधानमंत्री भी थे मुख्यमंत्री भी, अंग्रेजो के दरबारी नेता ही आज़ादी की लड़ाई के योद्धा बताये गयें। इस भ्रम से बाहर निकलना होगा कि नायक कौन है और खलनायक कौन है। यह जानने का समय है।

सनातन संस्कृति में सोलह संस्कार

सनातन संस्कृति में सोलह संस्कार (षोडश संस्कार) संस्कार मानव जीवन को पवित्र और व्यवस्थित करने के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये संस्कार जन्म से मृत्यु तक जीवन के विभिन्न चरणों को संन्यास, धर्म, और सामाजिक कर्तव्यों से जोड़ते हैं। इनका उल्लेख विभिन्न हिंदू ग्रंथों जैसे मनुस्मृति, गृह्यसूत्र, और पुराणों में मिलता है।हमारे धर्म में देवताओं के 15 संस्कार और मनुष्यों के 16 संस्कार बताए गए हैं। बिना संस्कार के मनुष्य जड़वत है जैसे पत्थर बिना संस्कार के मंदिर का देवता नहीं बन सकता उसी प्रकार से मनुष्य बिना संस्कार के अपने मानवता को और मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता इसलिए आईए हम 16 संस्कारों के विषय में संक्षिप्त में जानकारी आपको प्रदान करते हैं ।

1.गर्भाधान संस्कार

गर्भाधानं प्रथमं स्यात्, पुण्यं धर्मस्य साधनम्।
संतानस्य शुभं जन्म, बीजं पवित्रमुच्यते।।

गर्भाधान संस्कार जीवन का प्रथम संस्कार है, जो धर्म और पुण्य का साधन है। यह शुभ संतान के जन्म के लिए पवित्र बीज की स्थापना करता है।

मनुस्मृति (2.26)

2. पुंसवन संस्कार

पुंसवनं द्वितीयं स्यात्, गर्भे पुत्रस्य सिद्धये।
मंत्रः संस्कारितं बीजं, स्वास्थ्यं च बलमाप्नुयात् ।।

गर्भावस्था के तीसरे माह में पुंसवन संस्कार किया जाता है, जो पुत्र प्राप्ति और गर्भ के स्वस्थ विकास के लिए होता है। मंत्रों द्वारा बीज को संस्कारित किया जाता है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र (1.13) में इसका वर्णन है, जहां औषधियों और मंत्रों का उपयोग बताया गया है।

3. सीमन्तोन्नयन संस्कार

सीमन्तोन्नयनं तृतीयं, गर्भस्य रक्षणाय च।
माता पुत्रस्य सौभाग्यं, मंत्रैः संनादति प्रियम् ।।

गर्भावस्था के छठे या आठवें माह में सीमन्तोन्नयन संस्कार माता और गर्भ की रक्षा के लिए किया जाता है। यह माता और शिशु के सौभाग्य को बढ़ाता है।

पराशर गृह्यसूत्र में इसे गर्भिणी के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण बताया गया है।

4. जातकर्म संस्कार

जातकर्म चतुर्थं स्यात्, जन्मकालस्य संस्कृतिः ।
मधुक्षीरं पिता दद्यात्, पुत्रस्य दीर्घजीवने।।

जन्म के तुरंत बाद जातकर्म संस्कार किया जाता है, जिसमें पिता शिशु को मधु और घी चटाता है, ताकि उसका जीवन दीर्घ और स्वस्थ हो।

मनुस्मृति (2.29) और गोभिल गृह्यसूत्र में इसका उल्लेख है।

5.नामकरण संस्कार

नामकरणं पञ्चमं स्यात्, नाम शुभं प्रदायति।
नक्षत्रं च विचार्यैव, पुत्रस्य कीर्तिरुज्ज्वला।।

जन्म के ग्यारहवें दिन नामकरण संस्कार होता है, जिसमें नक्षत्र और धर्म के आधार पर शिशु का शुभ नाम रखा जाता है, जो उसकी कीर्ति को बढ़ाता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति और गृह्यसूत्रों में इसका विधान है।

6.निष्क्रमण संस्कार

निष्क्रमणं षष्ठं स्यात्, गृहात् सूर्यदर्शनाय च।
प्रकृत्या संनादति पुत्रः, विश्वेन संनादति च।।

चौथे माह में निष्क्रमण संस्कार में शिशु को पहली बार घर से बाहर सूर्य और प्रकृति के दर्शन कराए जाते हैं।

कात्यायन गृह्यसूत्र में इसका वर्णन है।

7. अन्नप्राशन संस्कार

अन्नप्राशनं सप्तमं, षष्ठे मासे समाचरेत्।
अन्नं शिशोः प्रदायति, बलं स्वास्थ्यं च वर्द्धति।।

छठे माह में अन्नप्राशन संस्कार में शिशु को पहली बार अन्न खिलाया जाता है, जो उसके बल और स्वास्थ्य को बढ़ाता है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र (1.16) में इसका उल्लेख है।

8.चूड़ाकरण संस्कार

चूड़ाकरणमष्टमं, केशसंस्कारमुच्यते।
प्रथमं केशवपनं, पुण्यं दीर्घायुषे नृणाम् ।।

प्रथम या तृतीय वर्ष में चूड़ाकरण (मुंडन) संस्कार होता है, जिसमें शिशु के केश काटकर दीर्घायु की कामना की जाती है।

मनुस्मृति और गृह्यसूत्रों में इसका विधान है।

9.कर्णवेधन संस्कार

कर्णवेधनं नवमं, श्रवणस्य शुभाय च।
मंत्रैः कर्णौ विशोधति, बुद्धिः प्रज्ञा च वर्द्धति।।

कर्णवेधन संस्कार में कानों को छेदकर बुद्धि और प्रज्ञा की वृद्धि की कामना की जाती है।

10. विद्यारम्भ संस्कार

विद्यारम्भं दशमं स्यात्, विद्या ग्रहणकारणम् ।
लिप्या मंत्रैः संस्कृतं, बुद्धिः प्रज्वलति सदा।।

पांचवें वर्ष में विद्यारम्भ संस्कार में बच्चे को अक्षर और विद्या की दीक्षा दी जाती है, जिससे उसकी बुद्धि प्रज्वलित होती है। याज्ञवल्क्य स्मृति और परंपरागत ग्रंथों में इसका उल्लेख है।

11. उपनयन संस्कार

उपनयनमेकादशं, वेदाध्ययनकारणम् ।
यज्ञोपवीतं धारति, ब्रह्मचर्य समाश्रितः ।।

उपनयन संस्कार में यज्ञोपवीत धारण कर बच्चे को वेदाध्ययन और ब्रह्मचर्य के लिए तैयार किया जाता है। मनुस्मृति (2.36-40) और याज्ञवल्क्य स्मृति में इसका विस्तृत वर्णन है।

12. वेदारम्भ संस्कार

वेदारम्भं द्वादशं, वेदस्य ग्रहणं शुभम् ।
गुरुणा संनादति पुत्रः, ज्ञानं च प्राप्नोति सदा ।।

उपनयन के बाद वेदारम्भ संस्कार में वेदों का अध्ययन शुरू किया जाता है, जो ज्ञान की प्राप्ति का आधार है। गृह्यसूत्र और शतपथ ब्राह्मण में इसका उल्लेख है।

13.समावर्तन संस्कार

समावर्तनं त्रयोदशं, गुरुकुलात् निवर्तनम् ।
स्नातकः संस्कृतो भूत्वा, गृहस्थाय समाश्रितः ।।

समावर्तन संस्कार में गुरुकुल से शिक्षा पूर्ण कर स्नातक बनकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया जाता है। मनुस्मृति (3.4) और गृह्यसूत्रों में इसका वर्णन है।

14.विवाह संस्कार

विवाहः चतुर्दशं स्यात्, धर्मस्य मूलमुच्यते।
सप्तपदी मंत्रसंयुक्तं, दंपत्योः सौभाग्यदम् ।।

विवाह संस्कार धर्म का मूल है, जिसमें सप्तपदी और मंत्रों द्वारा दंपति का सौभाग्य सुनिश्चित किया जाता है। मनुस्मृति (3.20-44) और गृह्यसूत्रों में इसका विस्तृत वर्णन है।

15.वानप्रस्थ संस्कार

वानप्रस्थं पञ्चदशं, गृहात् संन्यासकारणम् ।
त्यागं तपस्यां च कृत्वा, मुक्तये मार्गमाश्रितः ।।

वानप्रस्थ संस्कार में गृहस्थ जीवन त्यागकर तप और संन्यास की ओर बढ़ा जाता है।

16. अंत्येष्टि संस्कार

अंत्येष्टि षोडशं स्यात्, देहस्य मुक्तिकारणम् ।
अग्नौ संस्कारितं देहं, मोक्षमाप्नोति मानवः ।।

अंत्येष्टि अंतिम संस्कार है, जिसमें देह को अग्नि द्वारा संस्कारित कर मोक्ष की प्राप्ति की कामना की जाती है। गरुड़ पुराण और गृह्यसूत्रों में इसका वर्णन है।

ये सोलह संस्कार हिंदू जीवन को जन्म से मृत्यु तक पवित्रता, धर्म, और कर्तव्य के साथ जोड़ते हैं। प्रत्येक संस्कार का उद्देश्य व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक रूप से उन्नत करना है। इनका वर्णन वेदों, स्मृतियों, और गृह्यसूत्रों में विस्तार से मिलता है। आगे दूसरे अंक में हम एक-एक संस्कार के विषय में विस्तृत और संपूर्ण जानकारी क्रमशः आप लोगों के सम्मुख रखेंगे।

हमारी संस्कृति हमारी धरोहर

भारतीय जीवनादर्श

जब हम धरोहर शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा मस्तिष्क जो चित्र प्रस्तुत करता है वह आमतौर पर मंदिर, मठों और दुर्ग का होता है लेकिन उनके साथ-ही-साथ हमारी कला, नृत्य ,गीत ,खान-पान, पहनावा, भाषा, ग्रंथ ,शहर तथा संस्कृति विचार और जीवन मूल्य भी हमारी धरोहर का ही हिस्सा हैं।

यूं तो धर्म और संस्कृति में अधिक अंतर नहीं होता संस्कृति धर्म को प्रभावित करती है और धर्म से प्रभावित भी होती है और ठीक इसका उल्टा भी सत्य है और हमारी संस्कृति तो विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि यह सबसे आधुनिक, तार्किक, वैज्ञानिक और सहिष्णु संस्कृति रही है ।दुनिया की किसी भी प्राचीन संस्कृति या धर्म में आपको गणित नहीं मिल सकता लेकिन हमारे पास वैदिक गणित के अद्भुत सूत्र उपलब्ध हैं जो की बड़ी से बड़ी समस्याओं को आसानी से हल कर दें, दुनिया के किसी भी संस्कृति में विज्ञान आपको नहीं मिलेगा लेकिन हमारे ग्रंथो में भरपूर विज्ञान समाहित है।

उदाहरण- के तौर पर अगस्त्य संहिता,चरक संहिता आदि । हमारा दर्शन हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और वह इतना व्यापक है कि अगर उसे पढ़ना और विचारना हो तो शायद एक जन्म भी कम पड़ जाए । दुनिया के किसी भी संस्कृति में आपको शास्त्रार्थ की परंपरा नहीं मिल सकती। यह सारे विषय एवं परंपराएं हमारी संस्कृति में इसलिए हैं क्योंकि हमारे संस्कृति का उद्देश्य कभी भी केवल जीविकोपार्जन, धनोपार्जन और शारीरिक सुख और वैभव तक सीमित नहीं रहा है अपितु हमारी संस्कृति का लक्ष्य सदैव हमे ऊंचा उठाना रहा है ।

हमारी संस्कृति का उद्देश्य प्रारंभ से ही चेतना का उत्थान रहा है , अस्तु हमारे जीवन में भी सबसे अधिक हमारे आदर्श एवं मूल्यों का ही स्थान है जो कि वेदों ,वेदांतो ,उपनिषदों, गीता और रामायण पर आधारित है।

विभिन्न कालखंडो में हमारा भारत देश विभिन्न आक्रांताओं की क्रूर आक्रमण का साक्षी रहा है, कुछ का उद्देश्य लूटना तो कुछ का शासन करना था । जब वह भारत आए तो साथ ले आए अपनी संस्कृति और और उन्होंने अपनी संस्कृति को एक योजना के तहत हमारे ऊपर जबरन थोपने का प्रयास किया जिससे हमारी संस्कृति में भी कुछ विकृतियाँ आई और कुछ परिवर्तन हुए।

यदि किसी भी सभ्यता को नष्ट करना है तो उसके आदर्श और मूल्य में परिवर्तन कर दो अर्थात् उसकी संस्कृति को नष्ट कर दो फलस्वरूप पूरी सभ्यता ताश के पत्तों की तरह ढह जाएगी ।

अपितु आज हम समाज में देखते हैं कि लोगों को अपनी भारतीय संस्कृति अपनाने में शर्म आती है ,तिलक करने में शर्म आती है क्योंकि समय के साथ योजना के तहत उनके आदर्शों और मूल्यों का पश्चिमीकरण कर दिया गया।

आज शायद ही कोई हो जो आपको धोती कुर्ता पहने दिख जाए जो कि महज कुछ वर्षों पहले तक आम भारतीय के वस्त्र हुआ करते थे तो आज यह गायब क्यूं हो गए? क्योंकि लोगों के मूल्य में परिवर्तन ने उन्हें अंग्रेजीयत का गुलाम बनाया दिया (यहां मैंने पूरी जिम्मेदारी के साथ अंग्रेजी नहीं अपितु अंग्रेजीयत शब्द का प्रयोग किया है)।

भगवान राम और धर्मात्मा भरत के आदर्शों का क्या हुआ? कहां चले गए श्रवण कुमार के आदर्श? इन सब को योजना के तहत सिनेमा संगीत तथा शिक्षा और साहित्य में परिवर्तन करके नष्ट कर दिया गया क्योकिं एक सभ्यता जो कि निरंतर रूप से अपने संस्कृति से जुड़ी हो उसे गुलाम कर पाना बहुत कठिन है और परतंत्रता केवल एक शासन व्यवस्था नहीं अपितु एक मानसिक अवस्था भी है।

आज जब हम अपने समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी, भाई-भाई में संपत्ति को लेकर विवाद ,पति-पत्नी में तलाक के बढ़ते मुकदमे और रील्स के लत से परेशान युवा पीढ़ी को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी संस्कृति में परिवर्तन तथा हमारे आदर्श एवं भारतीय मूल्य में भारी गिरावट आ चुकी है और इसके पुनर्जागरण के लिए एक क्रांति की आवश्यकता है।

अगर हम मानव इतिहास को उठाकर देखें तो पाएंगे कि सारी क्रांतियां एक विचार से ही उत्पन्न होती हैं।

क्रांति जनमानस के समूह के रूप में गोचर हो उससे पूर्व वह एक विचार के रूप में ही अंकुरित होती है और ऐसा ही एक विचार हमारे प्रमुख संयोजक श्री कृष्णानंद पाण्डेय जी को आया। कुछ लोग स्थिति को केवल देखते हैं ,कुछ केवल सोचते हैं और कुछ क्रिया में विश्वास रखते हैं हमारे नेता जी ने 'जगत हिताय च' (ऋग्वेद) की भावना से प्रेरित होकर अपने विचारों को धरातल पे एक समूह का रूप दिया। और फिर लोग जुड़ते गए।

'मैं अकेले ही चला था मंजिले जानिवे मगर लोग आते गए कारवां बनता गया'

आज यह धरोहर संरक्षण एक संगठन के रूप में सुचारू ढंग से अपनी भारतीय संस्कृति और सभ्यता को बचाने और भारतीय मूल्यों तथा आदर्श के पुनरुत्थान के अपने लक्ष्य में सफलतापूर्वक निरंतरता से आगे बढ़ रहा है और इस अभियान में कृष्णानंद पाण्डेय जी के नेतृत्व एवं सक्रियता की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

आप सब अपनी संस्कृति एवं धर्म को जानने व समझने का प्रयास करें उसे पर गर्व करें और नेताजी के विचारों द्वारा आरंभ इस क्रांति में सहभागी बने।

धन्यवाद।

डा. अखिलेश कुमार मिश्रा
(प्रो.राजनीति विज्ञान)
डा.राम मनोहर लोहिया पीजी कॉलेज,
राजातालाब, वाराणसी

YASH
Power & Communication
SATISH PANDEY
Cell. : 8181953998
Reg. Off. :
Rauna Khurd,
Cholapur
Distt. - Varanasi
Mob. : 8181953998
E-mail : yashpandc@gmail.com
केमिकल अर्थिंग के स्पेशलिस्ट

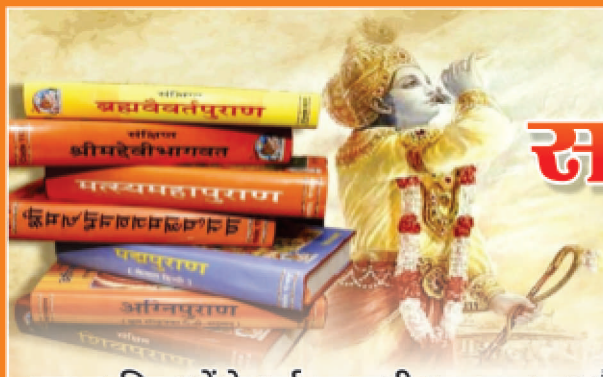

सनातन के १८ पुराण

पुराण, हिन्दुओं के धर्म-सम्बन्धी आख्यान ग्रन्थ हैं, जिनमें संसार, ऋषियों - राजाओं के वृत्तान्त आदि हैं। भारतीय जीवन-धारा में जिन ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण प्राचीन भक्ति-ग्रंथों के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। कुछ पुराणों में सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विवरण दिया गया है।

पुराण की परिभाषा - 'पुराण' का शाब्दिक अर्थ है 'प्राचीन आख्यान' या 'पुरानी कथा'। 'पुरा' शब्द का अर्थ है अनागत एवं अतीत। 'अण' शब्द का अर्थ होता है कहना या बतलाना। सांस्कृतिक अर्थ से हिन्दू संस्कृति के वे विशिष्ट धर्मग्रंथ जिनमें सृष्टि से लेकर प्रलय तक का इतिहास-वर्णन शब्दों से किया गया हो, पुराण कहे जाते है।

पुराण के नाम और उनका महत्त्व -

(1) ब्रह्मपुराण - इसे "आदिपुराण" भी कहा जाता है। इसका प्रवचन नैमिषारण्य में 'लोमहर्षण' ऋषि ने किया था। इसमें सृष्टि, मनु की उत्पत्ति, उनके वंश का वर्णन, देवों और प्राणियों की उत्पत्ति का वर्णन है। इस पुराण में विभिन्न तीर्थों का विस्तार से वर्णन है। इसका एक परिशिष्ट सौर उपपुराण भी है, जिसमें उड़ीसा के 'कोणार्क' मन्दिर का वर्णन है।

(2) पद्मपुराण - इसमें कुल 641 अध्याय और 48,000 श्लोक हैं। इसके खण्ड हैं -
(क) सृष्टिखण्ड (ख) भूमिखण्ड (ग) स्वर्गखण्ड (घ) पातालखण्ड (ङ) उत्तरखण्ड।
इसका प्रवचन नैमिषारण्य में सूत उग्रश्रवा ने किया था। ये लोमहर्षण के पुत्र थे। इस पुराण में अनेक विषयों के साथ विष्णुभक्ति के अनेक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

(3) विष्णुपुराण - इसमें विष्णु को परम देवता के रूप में निरूपित किया गया है। इसमें कुल छः खण्ड, 126 अध्याय हैं। इस पुराण के प्रवक्ता 'पराशर' ऋषि और श्रोता 'मैत्रेय' हैं।

(4) वायुपुराण - इसमें विशेषकर शिव का वर्णन किया गया है, अतः इस कारण इसे "शिवपुराण" भी कहा जाता है। एक शिवपुराण पृथक् भी है। इसमें 112 अध्याय, 11,000 श्लोक हैं। इस पुराण का प्रचलन मगध-क्षेत्र में बहुत था। इसमें गया-माहात्म्य है। इसमें सृष्टिक्रम, भूगोल, खगोल, युगों, ऋषियों तथा तीर्थों का वर्णन एवं राजवंशों, ऋषिवंशों, वेद की शाखाओं, संगीतशास्त्र और शिवभक्ति का विस्तृत निरूपण है।

(5) भागवतपुराण - यह सर्वाधिक प्रचलित पुराण है। इस पुराण का सप्ताह-वाचन-पारायण भी होता है। इसे सभी दर्शनों का सार "निगमकल्पतरोर्गलितम्" और विद्वानों का परीक्षास्थल "विद्यावतां भागवते परीक्षा" माना जाता है। इसमें श्रीकृष्ण की भक्ति के बारे में बताया गया है। इसमें कुल 12 स्कंध, 335 अध्याय और 18,000 श्लोक हैं।

(6) नारद (बृहन्नारदीय) पुराण - इसे महापुराण भी कहा जाता है। इसमें पुराण के 5 लक्षण घटित नहीं होते हैं। इसमें वैष्णवों के उत्सवों और व्रतों का वर्णन है। इसमें 2 खण्ड हैः- (क) पूर्व खण्ड (125 अध्याय)। (ख) उत्तर-खण्ड (82 अध्याय)।
इसमें 18,000 श्लोक हैं। इसके विषय मोक्ष, धर्म, नक्षत्र, एवं कल्प का निरुपण, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, गृहविचार, मन्त्रसिद्धि,, वर्णाश्रम-धर्म, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि का वर्णन है।

(7) मार्कण्डेयपुराण - इसे प्राचीनतम पुराण माना जाता है। इसमें इन्द्र, अग्नि, सूर्य आदि वैदिक देवताओं का वर्णन किया गया है। इसके प्रवक्ता 'मार्कण्डेय' ऋषि और श्रोता 'क्रौष्टुकि' शिष्य हैं। इसमें 138 अध्याय और 7,000 श्लोक है। इसमें गृहस्थ धर्म, श्राद्ध, दिनचर्या, नित्यकर्म, व्रत, उत्सव, अनुसूया की पतिव्रता-कथा, योग, दुर्गा-माहात्म्य आदि विषयों का वर्णन है।

(8) अग्निपुराण - इसके प्रवक्ता 'अग्नि' और श्रोता 'वसिष्ठ' हैं। इसी कारण इसे अग्निपुराण कहा जाता है। इसे भारतीय संस्कृति और विद्याओं का महाकोश माना जाता है। इसमें विष्णु के अवतारों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त शिवलिंग, दुर्गा, गणेश, सूर्य, प्राणप्रतिष्ठा आदि के अतिरिक्त भूगोल, गणित, फलित ज्योतिष, विवाह, मृत्यु, शकुनविद्या, वास्तुविद्या, दिनचर्या, नीतिशास्त्र, युद्धविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, काव्य, व्याकरण, कोशनिर्माण आदि नाना विषयों का वर्णन है।

(9) भविष्यपुराण - इसमें भविष्य की घटनाओं का वर्णन है। इसमें दो खण्ड है:-(क) पूर्वार्ध (ख) उत्तरार्ध । इसमें कुल 15,000 श्लोक हैं। इसमें कुल 5 पर्व है:- (क) ब्राह्मपर्व, (ख) विष्णुपर्व, (ग) शिवपर्व, (घ) सूर्यपर्व (ङ) प्रतिसर्गपर्व।
इसमें मुख्यत: ब्राह्मण-धर्म, आचार, वर्णाश्रम-धर्म आदि विषयों का वर्णन है।

(10) ब्रह्मवैवर्तपुराण - यह 'वैष्णव' पुराण है। इसमें श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन किया गया है। इसमें कुल 18,000 श्लोक हैं और चार खण्ड हैं - (क) ब्रह्म (ख) प्रकृति (ग) गणेश (घ) श्री कृष्ण-जन्म

(11) लिङ्गपुराण - इसमें शिव की उपासना का वर्णन है। इसमें शिव के 28 अवतारों की कथाएँ दी गई है। इसमें 11,000 श्लोक और 163 अध्याय है। इसे पूर्व और उत्तर नाम से दो भागों में विभाजित किया गया है।

(12) वराहपुराण - इसमें विष्णु के वराह-अवतार का वर्णन है। पाताललोक से पृथिवी का उद्धार करके वराह ने इस पुराण का प्रवचन किया था। इसमें 24,000 श्लोक थे। सम्प्रति केवल 11,000 ही प्राप्त होते हैं और 217 अध्याय है।

(13) स्कन्दपुराण - यह पुराण शिव के पुत्र स्कन्द (कार्तिकेय, सुब्रह्मण्य) के नाम पर है। यह सबसे बड़ा पुराण है। इसमें कुल 81,000 श्लोक हैं। इस पुराण में सात खण्ड हैं- (क) माहेश्वर, (ख) वैष्णव, (ग) ब्रह्म, (घ) काशी (ङ) अवन्ती (रेवा), (च) नागर (ताप्ती) (छ) प्रभास-खण्ड। काशीखण्ड में "गंगासहस्रनाम" स्तोत्र भी है।

(14) वामनपुराण - इसमें विष्णु के वामन अवतार का वर्णन है। इसमें 95 अध्याय और 10,000 श्लोक हैं। इसमें शिव माहात्म्य, शैव तीर्थ, उमा-शिव विवाह, गणेश उत्पत्ति, कार्तिकेय चरित इत्यादि वर्णन हैं ।

(15) कूर्मपुराण - इसमें विष्णु के कूर्म-अवतार का वर्णन किया गया है। इसके दो भाग हैं, जिसमें 51 और 44 अध्याय हैं। इसमें पुराण के पाँचों लक्षण मिलते हैं। इस पुराण में 'ईश्वरगीता' और 'व्यासगीता' भी है।

(16) मत्स्यपुराण - इसमें पुराण के पाँचों लक्षण घटित होते हैं। इसमें 291 अध्याय और 14,000 श्लोक हैं। प्राचीन संस्करणों में 19,000 श्लोक मिलते हैं। इसमें 'जलप्रलय' का वर्णन हैं। इसमें कलियुग के राजाओं की सूची दी गई है।

(17) गरुड़पुराण - यह वैष्णवपुराण है। इसके प्रवक्ता 'विष्णु' और श्रोता 'गरुड़' हैं, इसे गरुड़ ने कश्यप को सुनाया था। इसमें विष्णुपूजा का वर्णन है। इसके दो खण्ड हैं, जिसमें पूर्वखण्ड में 229 और उत्तरखण्ड में 35 अध्याय और 18,000 श्लोक हैं। इसका पूर्वखण्ड 'विश्वकोशात्मक' माना जाता है।

(18) ब्रह्माण्डपुराण - इसमें 109 अध्याय तथा 12,000 श्लोक है।
इसमें चार पाद है- (क) प्रक्रिया (ख) अनुषङ्ग (ग) उपोद्घात् (घ) उपसंहार

"जो पुराण पढ़ेगा, वही अपने जीवन और संस्कृति का असली मार्गदर्शक पाएगा।"

"पुराण पढ़ना केवल ज्ञान नहीं, बल्कि सनातन धर्म की जड़ों से जुड़ने का अवसर है।"

गौरव मिश्र
प्रदेश संयोजक
धरोहर संरक्षण सेवा संगठन

स्वदेशी के प्रहार से खत्म होगा टैरिफ का आतंकवाद

भारत की आर्थिक स्वतंत्रता केवल हमारी सीमाओं की सुरक्षा से पूरी नहीं होती, बल्कि हमारे बाजारों, उद्योगों और कारीगरों की रक्षा से भी होती है। आज जबकि दुनिया आपसी व्यापार और वैश्वीकरण के नाम पर एक-दूसरे से जुड़ चुकी है, अंतरराष्ट्रीय व्यापार के खेल में कई ऐसे हथियार हैं, जो बिना गोली-बारूद के भी किसी देश को कमजोर कर सकते हैं। इनमें से एक है टैरिफ यानी आयात शुल्क। हाल ही में अमेरिका ने भारत के कई उत्पादों पर ऊंचा टैरिफ लगा दिया है, जिसका सीधा असर हमारे कारीगरों, किसानों और छोटे उद्योगों पर पड़ा है। यह कदम केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक तरह का आर्थिक आतंकवाद है, जो हमारे देश की मेहनत, हमारी परंपरा और हमारी अर्थव्यवस्था पर हमला करता है। टैरिफ की यह चोट किसी बम की तरह दिखती नहीं, लेकिन यह उतनी ही खतरनाक है, क्योंकि यह हमारे उत्पादन को महंगा बनाकर विदेशी बाजार में उसकी मांग खत्म कर देती है और धीरे-धीरे हमारे रोजगार, हमारी आय और हमारी आत्मनिर्भरता को खोखला कर देती है।

अमेरिका का यह फैसला हमारे बनारसी बुनकर से लेकर महाराष्ट्र के किसान, पंजाब के निर्यातक से लेकर केरल के मसाला उत्पादक तक, सभी को प्रभावित कर रहा है। हमारे वस्त्र, मसाले, हस्तशिल्प, इंजीनियरिंग प्रोडक्ट और आईटी सेवाएं...ये सब भारत की ताकत हैं। लेकिन जब इन पर ऊंचा टैरिफ लगाया जाता है, तो विदेशी बाजार में इनकी कीमत बढ़ जाती है, ग्राहक इनसे मुंह मोड़ लेते हैं और हमारे उत्पादों की बिक्री गिर जाती है। यह केवल आर्थिक नुकसान नहीं है, बल्कि हमारे आत्मविश्वास और हमारी वैश्विक पहचान पर भी चोट है।

यहीं पर धरोहर संरक्षण सेवा संगठन की भूमिका सामने आती है। इस संगठन ने हाल के दिनों में एक जन-जागरण अभियान शुरू किया है, जिसमें लोगों को यह प्रेरणा दी जा रही है कि वे अपने दैनिक जीवन में स्वदेशी को अपनाएं और विदेशी वस्तुओं को अपने जीवन से बाहर करें। संगठन का स्पष्ट संदेश है कि जब तक हम खुद अपने देश में बने उत्पादों को प्राथमिकता नहीं देंगे, तब तक हम विदेशी टैरिफ के जाल से नहीं बच सकते। हर विदेशी सामान जो हम खरीदते हैं, वह न केवल हमारे पैसों को विदेश भेजता है, बल्कि हमारे अपने उद्योगों और रोजगार को भी कमजोर करता है।

टैरिफ किस तरह भारत को खोखला कर रहा है, यह समझना जरूरी है। जब किसी भारतीय उत्पाद पर ऊंचा टैरिफ लगता है, तो उसकी कीमत विदेशी बाजार में प्रतिस्पर्धा करने लायक नहीं रहती। उदाहरण के तौर पर, अगर बनारस की साड़ी अमेरिका में पहले 100 डॉलर में बिकती थी और अब उस पर 30% टैरिफ लग गया, तो उसकी कीमत 130 डॉलर हो जाएगी। इतनी कीमत बढ़ने पर ग्राहक सस्ता विकल्प तलाशेंगे और हमारी साड़ी का बाजार सिमट जाएगा। यही हाल मसालों, हैंडीक्राफ्ट, आईटी सेवाओं और इंजीनियरिंग उत्पादों का है। धीरे-धीरे यह गिरावट हमारे उत्पादन को घटाती है, कारीगर बेरोजगार होते हैं, फैक्टरियां बंद होती हैं और अंत में हमारी अर्थव्यवस्था कमजोर हो जाती है।

www.hoteljee.com
Mob.: 8090099099
Hotel Jee

Rooms
Restaurant
Banquet
C 27/54, JAGATGANJ, VARANASI - (NEAR SANSKRIT UNIVERSITY)

SANJEEV PANDIT
ARCHITECT
8115005004
urbanaturestudio@gmail.com
J12/8, Elexi Enclave (Lal Building)
Kabirchaura-Nati Imli Road
(Opposite AXIS Bank) Varanasi
@urbanaturestudio
Urbanature Studio
Architecture | Interior | Engineering

धरोहर संरक्षण सेवा संगठन का मानना है कि इस खतरे से निपटने का सबसे मजबूत तरीका है...अपने देश के भीतर अपने उत्पादों की खपत बढ़ाना। जब हम खुद अपने उत्पादों को खरीदेंगे, तो हमारे उद्योग केवल निर्यात पर निर्भर नहीं रहेंगे। घरेलू बाजार मजबूत होगा, विदेशी दबाव का असर कम होगा और हमारी अर्थव्यवस्था स्थिर रहेगी। यही असली आत्मनिर्भरता है। संगठन ने इस अभियान के तहत लोगों से अपील की है कि वे हर खरीदारी से पहले खुद से पूछें...क्या इसका स्वदेशी विकल्प उपलब्ध है? अगर हां, तो पहले स्वदेशी को चुनें।

धरोहर संरक्षण सेवा संगठन ने कई बार अपने अभियानों में कारीगरों और छोटे व्यापारियों को प्रशिक्षण दिया है...कैसे अपने उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाएं, कैसे उन्हें ऑनलाइन बेचें और कैसे विदेशी बाजार की मांग के अनुसार बदलाव करें। यह काम केवल व्यापारिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि हर वह शिल्प जो बाजार से गायब हो जाता है, हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक हिस्सा खो जाता है।

इस पूरे अभियान में जनता की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। सरकारें नीतियां बनाती हैं, लेकिन बाजार जनता के फैसलों से चलता है। अगर ग्राहक ठान लें कि वे विदेशी सामान की बजाय स्वदेशी खरीदेंगे, तो बाजार खुद बदल जाएगा। यही कारण है कि धरोहर संरक्षण सेवा संगठन का अभियान केवल अपील नहीं, बल्कि एक आंदोलन बनता जा रहा है। यह संगठन लोगों को यह समझाने में लगा है कि हर विदेशी सामान जो हम खरीदते हैं, वह हमारे अपने उद्योग के लिए एक टैरिफ से भी बड़ा खतरा है, क्योंकि वह सीधे-सीधे हमारे बाजार में प्रतिस्पर्धा करता है और हमारे उद्योग की जगह ले लेता है।

भारत जैसे विशाल और विविधता भरे देश में स्वदेशी की संभावनाएं अनगिनत हैं। यहां हर राज्य, हर शहर, हर गांव की अपनी खासियत है। बनारस की साड़ी, मुरादाबाद का पीतल, सहारनपुर की नक्काशी, कांचीपुरम की सिल्क, जयपुर के गहने, कश्मीर का शॉल...ये सब हमारे देश की पहचान हैं। अगर हम खुद इनको प्राथमिकता देंगे, तो विदेशी टैरिफ चाहे जितना बढ़ जाए, हमारे उद्योग मजबूत बने रहेंगे।

अंत में यह समझना जरूरी है कि टैरिफ का आतंकवाद केवल विदेशी सरकारों की नीतियों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह हमारी अपनी कमजोरियों का भी नतीजा है। अगर हम अपने उद्योगों को मजबूत बनाएंगे, अपने बाजार में स्वदेशी को प्राथमिकता देंगे, गुणवत्ता और तकनीक में सुधार करेंगे, तो कोई भी विदेशी ताकत हमें कमजोर नहीं कर पाएगी।

धरोहर संरक्षण सेवा संगठन का यह संदेश हर भारतीय के दिल में उतरना चाहिए..."पहले स्वदेशी, बाद में बाकी।" यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि हमारी आर्थिक स्वतंत्रता का मंत्र है। आज जब अमेरिका जैसे देश हमारे उत्पादों पर टैरिफ लगाकर हमें दबाने की कोशिश कर रहे हैं, तो हमें और भी मजबूती से स्वदेशी को अपनाना होगा। यही एकमात्र रास्ता है जिससे हम अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत रख सकते हैं, अपने कारीगरों की रोज़ी-रोटी बचा सकते हैं और अपने देश की गरिमा को बनाए रख सकते हैं।

इसलिए आओ, टैरिफ के आर्थिक आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हों, स्वदेशी को अपनाएं और अपने देश को आर्थिक रूप से अजेय बनाएं। यह लड़ाई सरकार की नहीं, हर भारतीय की है। और जब हर भारतीय अपने हिस्से का योगदान देगा, तभी यह लड़ाई जीती जाएगी।

गोविंद तिवारी
प्रदेश मीडिया प्रभारी,
धरोहर संरक्षण सेवा संगठन

संगठन की शक्ति.....

सम्वत् 2079 में 'धरोहर संरक्षण सेवा संगठन' का गठन हुआ। सम्वत् 2080 से भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्थी (गणेश चतुर्थी) को समाज में धर्म, संस्कृति के उत्थान का संकल्प लेकर प्रत्येक वर्ष 'सनातन विस्तार संकल्प दिवस' के रूप में उत्सव मनाया जाता है।

धरोहर संरक्षण सेवा संगठन के द्वारा प्रमुख रूप से तीन उत्सव मनाया जाता हैं।

1. **श्री हनुमान प्राकट्य उत्सव (शस्त्र और शास्त्र वितरण समारोह)**
   प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा श्री हनुमान प्राकट्य उत्सव पर हर सनातनी शस्त्रवान हो इसके लिए शस्त्र और शास्त्र वितरीत किया जाता हैं।
2. **धरोहर संरक्षण सेवा संगठन स्थापना दिवस**
3. **पितृ पक्ष (वृक्षारोपण पखवाड़ा)**

संगठन के प्रमुख कार्य :-

1. पंचक्रोशी यात्रा (काशी परिक्रमा)।
2. श्री हनुमत आराधना केन्द्र तैयार करना।
3. 1008 बार श्री हनुमान चालीसा पाठ अभियान।
4. गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा स्थापित एकादश रूद्र में से एक दक्षिण मुखी श्री हनुमान मंदिर बजरडीहा वाराणसी में एक चार्तुमास (चार माह) 24 घंटे 'श्री राम, जय राम, जय जय राम' अखण्ड संकीर्तन पाठ।
5. वाराणसी में भोजूबीर सिंधोरा मार्ग पर बीच सड़क में मजार को धरोहर संरक्षण सेवा संगठन के प्रयास से हटाया गया।
6. कृष्ण सुदामा शिक्षा अभियान।
7. शस्त्र और शास्त्र वितरण।
8. संस्कृति-संवाद यात्रा।

नवभारत

www.navbharatlive.com

'संस्कृति संवाद यात्रा' में वक्ताओं ने व्यक्त किए अपने विचार

संस्कृति को मानने से अधिक जानने की जरूरत

राष्ट्रीय सहारा

केसरिया भारत

मानवता के विस्तार की सूत्र है सनातन संस्कृति

सड़क के बीच मजार बनी जाम और जान की दुश्मन

धरोहर संरक्षण संगठन ने दिया अल्टीमेटम हस्ताक्षर में नहीं हटी तो खुद करेंगे हटाने का काम

सनातन संस्कृति विस्तार का केन्द्र है, मंदिर. कृष्णा नन्द पाण्डेय

सनातन के विस्तार के केन्द्र हैं मंदिर

कछवांरोड। धरोहर संरक्षण सेवा संगठन की ओर से चल रहे संस्कृति संवाद यात्रा की बैठक क्षेत्र के लालपुर गांव स्थित राधिका शिक्षण संस्थान लालपुर (मिर्जामुराद) में रविवार को आयोजित हुई। अध्यक्षता संजय मिश्र ने की। मुख्य वक्ता संगठन के प्रमुख संयोजक कृष्णा नन्द

सत्य ही सनातन, सनातन मानवता की रक्षक

एक देश, एक बोर्ड, एक कोर्स को लेकर ज्ञापन

सनातन संस्कृति की समृद्धि ही संविधान की मजबूती

जनसंदेश टाइम्स

शस्त्र की छांव में शास्त्र का अनुसंधान सम्भव : कृष्णानन्द

संवाद से रोकी जा सकती है धर्मांतरण की समस्या

आजीविका जेहाद रोकना सनातन की सभी जातियों का नैतिक कर्तव्य : कृष्णा नन्द पाण्डेय

संस्कृति व धरोहर संरक्षण के लिए हर सनातनी को योद्धा बनना होगा- कृष्णा नन्द पाण्डेय

भारत टाइम्स

मजबूत सरकार के साथ मजबूत समाज का होना जरूरी : कृष्णा नन्द पाण्डेय

सनातन संस्कृति विस्तार के लिए हर सनातनी को सैनिक बनना होगा. कृष्णा नन्द पाण्डेय

मानवता के विस्तार का सूत्र है, सनातन संस्कृति-कृष्णा नन्द पाण्डेय

सनातन केवल मानने का नहीं, जानने का विषय

शक्ति के लिए संगठित होना जरूरी : कृष्णा नंद पांडेय

हिन्दुस्तान

धर्मांतरण, पलायन राष्ट्र के लिए खतरा

राष्ट्रीय सहारा

राष्ट्र व संस्कृति की भूख बनाती है, व्यक्ति को क्रांतिकारी

रानी दुर्गावती के लहू का एक एक कतरा सनातन को समर्पित था- कृष्णा नन्द पाण्डेय

सनातन केवल मानने का नहीं, जानने का विषय : कृष्णानंद पांडेय

सनातन संस्कृति विस्तार का केन्द्र है मंदिर

एक देश, एक बोर्ड, एक फीस, एक पाठ्यक्रम को लेकर एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

सनातन का संविधान हर वर्ग को रोजगार प्रदान करता है: कृष्णानंद

महंगी शिक्षा से बढ़ रहीं गंभीर समस्याएं

सशक्त सनातन के लिए केसरिया व केसरी के लाल का अनुसरण करना होगा

सनातन की जाति व्यवस्था ही भारत की अर्थ व्यवस्था : कृष्णा नंद पांडेय

आजीविका जेहाद रोकना हर सनातनी का नैतिक कर्तव्य-कृष्णानंद पाण्डेय

धरोहर संरक्षण सेवा द्वारा सनातन विस्तार को संस्कृति संवाद यात्रा का आयोजन

वाराणसी। हरिकपोत मन्दिर शंकुलधारा पोखरा खोजवां में रविवार को धरोहर संरक्षण सेवा संगठन द्वारा संस्कृति संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अध्यक्षता राज मंगल

महंगी शिक्षा जनसंख्या असंतुलन का एक प्रमुख कारण

मंगलवार, 01 जुलाई 2025 5

सनातन की जाती व्यवस्था ही भारत की अर्थ व्यवस्था - कृष्णा नन्द पाण्डेय

शक्ति के लिए संगठित होना जरूरी : कृष्णा नंद पांडेय

सनातन युवा जागरण के लिए संवाद जरूरी

अवैध मजार पर चला प्रशासन का बुलडोजर, धरोहर संरक्षण सेवा संगठन के अल्टीमेटम के बाद हरकत में आई टीम

राजस्व व पीडब्ल्यूडी की रिपोर्ट के बाद प्रशासन ने दी कार्रवाई को हरी झंडी, संगठन के संयोजक ने जताया संतोष

श्री हनुमान जी उत्साह के देवता

वंशिका चिल्ड्रेन हॉस्पिटल

एस.4/50 बी, महावीर मन्दिर रोड, अर्दली बाजार – वाराणसी

डा. दीपक वर्मा	डा. अमिता वर्मा	डा. रीना सिंह
एम.डी.	एम.बी.बी.एस., डी.सी.एच.	एम.डी.
बाल रोग विशेषज्ञ	बाल रोग विशेषज्ञ	बाल रोग विशेषज्ञ

An Affiliated English Medium & Co-education School

Shiwam English School

Hasimpur, Pandeypur, Varanasi

email: shiwamenglishschool@gmail.com

ESTD-1987

UDISE CODE: 09670313601

ADMISSION OPEN

35+ years Experience as No.1 Institute of Modern Education

Play Group to Class-10th (CBSE Pattern)

NEP-2020

प्रबंधक गौरव मिश्र

9415686916, 8960446216

Raj Vfx

FUTUREAI

SCHOOL OF ANIMATION

In Future AI we teach AI and VFX Film Making with 100% Job Guarantee *T&C.

CONTACT US NOW

+91 88799 98001, +91 98195 62960 info@rajstudios.in

futureaianimation Future AI Animation www.future-ai.in

Unit No.1606, Chandak Unicorn, Dattaji Salvi Marg,
Off. Veera Desai Road, Andheri (W) Mumbai-53

DALAN
BUILD YOUR TRUST

dalan
samridhi

बदलते काशी में पायें
अपने सपनो का घर

PLOTS | SIMPLEX | DUPLEX | ROW HOUSE |
VILLA | APARTMENTS | FORMS HOUSE |
COMMERCIAL SPACE

Site Location:
Village : KANUDIH
Chandmari Market, Ring Road,
Varanasi (U.P.) - 221007

www. dalanbuilders.in

Call & WhatsApp
6389-088-088